International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2016; Page No. 76-79

भारतीय शिक्षा दर्शन में समाज में व्याप्त शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन

[1] अंजली वर्मा, [2] डॉ० चक लालवर्मा

[1] शोधकर्ती, नार्थ ईस्ट फ्रिन्टीयर टेक्नीकल यूनिवर्सिटी, अरुणाचल प्रदेश, भारत।
[2] शोध निर्देशक, नार्थ ईस्ट फ्रिन्टीयर टेक्नीकल यूनिवर्सिटी, अरुणाचल प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

शिक्षा अध्ययन अध्यापन की क्रिया के रूप में विद्यालय प्रक्रिया है विद्यालयी शिक्षा में कक्षा कार्य के लिए पुस्तकीय ज्ञान के विकास की आवश्यकता है। शिक्षा के क्षेत्र में नित नये आविषकारों को शोध एवं अनुसंधान के रूप में देखा जा रहा है एवं विषय–वस्तु की आवश्यकता के अनुरूप उसे बदला जा रहा है। देश को इक्कीसवीं शताब्दी की ओर ले जानें के लिए शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व सर्वविदित है। भारतीय शिक्षा में निहित कुछ प्रमुख समस्याओं के वर्णन एवं विश्लेषण तथा स्पष्टीकरण को प्रस्तुत करते हुए यह लघु शोध किया गया है।

1. भारतीय समाज में प्राचीन शिक्षा

हमारे भारतीय समाज के इतिहास के दर्पण मे झाँकते ही अपना प्रतिबिम्ब मुखर हो उठता है। इतिहास की धटनायें हमारी सत्यता का दर्शन कराती है।

1. भारतीय इतिहास ज्ञानार्जन की वह शाखा है जिसका संबंध व्यक्ति के राजनैतिक तथा सामाजिक विकास से है।
2. इतिहास यह विज्ञान है जो मनुष्य के भूतकाल के क्रिया–कलापों का क्रमबद्ध वैज्ञानिक अध्ययन है।
3. दर्शन, कला, संस्थाओं, कानून, भाषा एवं मनुष्य के विास के उत्पादन तथा समाज विकास के आर्थिक बदलाव की श्रंखला को इतिहास कहते है।
4. मनुष्य के जीवन में घटने वाली घटनाओं का क्रमिक अध्ययन ।

2. वर्तमान भारतीय समाज में शिक्षा की संरचना

प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा का संगठन उपयुक्त स्तर से विभाजित नहीं था। मध्यकालीन युग में प्रारम्भिक शिक्षा मकतब और मदरसों में होती थी।

3. भारतीय समाज में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की समस्यायें

भारतीय समाज में देश की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक परिस्थितयों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की प्रगति असन्तोषजनक प्रतीत होती है। पूर्व माध्यमिक शिक्षा अनेकोनेक समस्याओं में उलझ गयी है और इसके समाधान के बिना हम उसे प्रशिक्षुओं के सामाजिक, मानसिक, शरीरिक, सांवेगिक तथा नैतिक विकास का सशक्त साधन नहीं बना सकते।

4. भारतीय समाज में प्राथमिक शिक्षा की समस्यायें

हमारे भारतीय समाज में प्राथमिक शिक्षा अनविार्य व निशुल्क शिक्षा के रूप में प्रस्तुत की गयी, जो बहुत प्राचीन है। 1911 में ''इंडियन लेजिस्लेटिव काउन्सिल'' में ''श्री गोपाल कृष्ण गोखले'' द्वारा इसके बारे में विधेयक प्रस्तुत किया गया था। भारतीय संविधान के 54 वें अनुच्छेद 1060 में 14 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क व अनविार्य शिक्षा की सुविधायें देने की बात कही गयी थी, लेकिन स्वतंत्रता के इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी इन वचनबद्ध कार्य को पूरा नहीं किया गया। सत्यता यह है कि संसाधनों की कमी या युक्तिसंगत कार्य नीति की कमी की आड़ में सरकार इस लक्ष्य को निरन्तर आगे आगे बढ़ाती जा रही है। हम यह उम्मीद करें कि प्राथमिक शिक्षा से तुड़ी भारतीय सरकार की नयी नीति के सफल क्रियान्वयन से बच्चों के अंधकारमाय जीवन में शिक्षा की विकास ज्योति प्रज्जवलित होगी।

5. भारतीय समाज में व्याप्त शिक्षा की समस्यायें

1. भारतीय समाज में व्याप्त माध्यमिक शिक्षा की समस्यायें।
2. धनाभाव की समस्या।
3. अध्यापकों से जुड़ी समस्यायें।
4. माध्यमिक विद्यालय के प्रबन्ध व प्रशासन की समस्या।
5. पाठ्य पुस्तकों की समस्या।
6. शिक्षण सामग्री की समस्या।
7. पाठ्यक्रम के निर्धारण की समस्या।
8. परीक्षा प्रणाली से संबन्धित अनेकोनेक समस्यायें।

6. भारतीय समाज में उच्च शिक्षा की समस्यायें

1. भाषा की समस्या
2. प्रवेश की समस्या।
3. पाठ्यक्रम उद्देश्यहीन।
4. पाठ्यक्रम की समस्या।
5. सांध्य कालीन कक्षाओं का प्रारम्भ होना।
6. निर्देशन व परामर्श का अभाव।
7. छात्र संघ संबन्धित समस्यायें।
8. उच्च शिक्षा देने वाली संस्थाओं का अनियंत्रित प्रचार–प्रसार।
9. अनुसंधान से जुड़ी समस्यायें।

7. अध्यापक शिक्षा से संबन्धित समस्यायें

शैक्षिक समृद्धि एवं ज्ञान गरिमा के कारण भारत को प्राचीन काल से ही जगत गुरू की उपाधि से विभूषित किया गया है। हरेक शिक्षा योजना का सफल संचालन शिक्षकों के शिक्षण, अधिगम प्रक्रियाओं, वैयक्तिक व्यवहार और कुशल कार्य–निष्ठा पर निर्भर है। अपने छात्रों के हित के लिए पुर्णतः प्रतिबद्ध, परिश्रमी व सृजनशील शिक्षक–शिक्षा प्रणाली में व्याप्त तमाम खामियों व नगण्यक्र लाभों के बावजूद भी अपने दायित्वों को समर्पण भाव से निभाया है। यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही है कि श्रेष्ठ ग्रन्थों, पुस्तकों एवं शोधकार्या के बाद भी कहीं न कहीं शिक्षकों की उदासीनता व निम्नस्तरीय गुण्वत्त के कारण शिक्षा का स्तर गिर है।

8. तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा की समस्यायें

वर्तमान युग विज्ञान व तकनीकी का युग है। इस युग में किसी भी देश एवं जनता की समृद्धि, कल्याण, वैभवता तथा सुरक्षा मुख्यतः

विज्ञान व तकनीकी के विकास पर निर्भर करती है। भौतिक संसाधनों की कमी भी देश की प्रगति में ज्यादा बाधक नहीं बन पाती, अगर लगन और परश्रिम तथा प्रशिक्षित नागरिक देश में हों।

9. प्रौढ़ शिक्षा की समस्यायें

स्वतन्तत्रता प्राप्ति के छह दशकों के उपरान्त भी हमारे देश में दस में से तीन व्यक्ति अभी भी अनपढ़ है। दस में से चार महिलायें अनपढ़ है। एक अनुमान के अनुसार भारत में कुल मिलाकर पन्द्रह करोड़ से अधिक पुरूष तथा लगभग पच्चीस करोड़ से अधिक स्त्रियाँ अनपढ़ है।

10. विकलांगों की शैक्षिक समस्यायें

संसार में पूर्णतः दो व्यक्ति एक समान नहीं होते। यही कारण है कि किसी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने हेतु जो बालक आते है, उनमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक तथा संवेगाात्मक आदि दृष्टिकोण से अनेक अंतर होते है। मनुष्य जीवन का नैतिकता का धर्म सभी जीवों की सुरक्षा है। प्राचीन समय से ही शारीरिक रूप से असक्षम व्यक्तियों हेतु उत्तरदायित्व राज्य का माना जाता है। विकलांगों के प्रति सहानुभूति, दया, सहायता, कल्याण भावना की वजह से राजनेता, धनी व्यक्ति या राज्य सरकार आवास गृह, छात्रावास, विद्यालय आदि की व्यवस्था हेतु आर्थिक सहायता उपलब्ध कराते रहे है।

11. स्त्री शिक्षा की समस्यायें

भारतीय सभ्यता, संस्कृति तथा परम्परा में नारियों को सदैव ही सम्मानजनक स्थान दिया जाता था। उन्हें देवी माँ या सहचरी कहकर पुकारा जाता था। ''स्वामी विवेकानन्द'' के शब्दों में ''महिलाओं को सदैव असहायता तथा दूसरों पर दासवत निर्भरता का प्रशिक्षण दिया गया''। महिला शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या थी तथा वर्तमान में इसकी स्थिति तथा समस्यायें क्या है।

12. दूरस्थ शिक्षा की समस्यायें –

दूरस्थ शिक्षा सुदूर अगम्य क्षेत्रों में शिक्षा के द्रुत प्रसार व विभिन्न सांस्कृतिक समूहों तथा लोगों की शैक्षिक जरूरतों को पूरा करने हेतु आंकाक्षायें व आशायें बढ़ गयी है। भारत के कोने में रेडियों व दूरदर्शन का नेटवर्क स्थापित किया गया है। भारत के अंतरिक्ष में अपने उपग्रह भी है।

13. जनसख्या की शैक्षिक समस्यायें

देश में जनता को देश का सबसे बड़ा संसाधन माना जाता है। प्राचीन काल में व्यक्तियों की संख्या ही देश की शक्ति मानी जाती थी, परन्तु वैज्ञानिक औद्योगिक क्रान्ति, स्वचालित यंत्रों व इलेक्ट्रानिक उपकरणों के प्रयोग की वजह से पुरानी मान्यतायें खत्म हो रही है। मनुष्य की गुणवत्ता ही देश की श्रेष्ठता की कसौटी है। वर्तमान समय में जनसंख्या की विस्फोटक वृद्धि के कारण जनता को पूर्ण विकास का समुचित लाभ नहीं मिल पाता तथा उसी की वजह से सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक, व्यावसायिक, जैविक, आर्थिक और वैयक्तिक आदि समस्यायें पैदा होती है।

14. भाषा की समस्या

भारतवर्ष विविधता का देश है। इसी विविधता के अन्तर्गत भाषा भी शैक्षिक स्तर पर अनेकोनेक साहित्यिक, असाहित्यिक भाषायें व आधुनिक विदेशी भाषायें प्रथम, द्वितीय व तृतीय भाषाओं के रूप में पढ़ाई जाती है। राष्ट्रीय या अखिल भारतीय सेवाओं में हिन्दी भाषी क्षेत्रों को ज्यादा महत्व मिलेगा तथा हिन्दी भारतीय भाषायें समृद्ध होगी। मगर हिन्दी भाषा वालों के स्वार्थ ने दक्षिण में हिन्दी विरोध को जन्म दिया।

15. शैक्षिक स्तर में गिरावत

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हम विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति कर रहे हैं, लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में लगातार पिछड़ते जा रहे हैं। भावी पीढ़ी को शिक्षित करने हेतु हम उपयोगी व सार्थक योजनायें बनाने व उन्हें क्रियान्वित करने में असफल रहे है। प्रायः लोगों को यह कहते सुना जाता है कि पिछले वर्षो में शिक्षा के क्षेत्र में हमने सिर्फ खोया है। शैक्षिक संस्थाओं की अपनी अस्मिता खतम हो चुकी है।

व्यक्ति के जीवन के तीन महत्वपूर्ण पक्ष होते है– सत्ता, सम्पदा और नैतिकता। सत्ता के पास दंड की शक्ति, सम्पदा के पास विनिमय की और नैतिकता में आत्मविश्वास और आस्था की। इन तीनों का संतुलन ठीक होने से जीवन सुचारू रूप से संचालित होता है। अगर इसमें आपस में असंतुलन उत्पन्न हो जाये तो मानव रूपी रथ चरमरा जाता है।

अनुसंधान अध्ययन की सविधि

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक अनेकोनेक समस्यायें थी, जिसमें शिक्षा प्रमुख समस्या है जो राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्या भी है। अतः शोध को पूर्णतः अवलोकन और साक्षात्कार के माध्यम से मनोवैज्ञानिक परीक्षण पर आधारित किया गया है।

इस शोध के अन्तर्गत शिक्षा से सम्बन्धित आंकड़ों को प्रस्तुत करने हेतु सामाजिक पत्र पत्रिकाओं एवं राजनीतिक पत्रों, इंटरनेट आदि को माध्यम बनाया गया है।

इस शोध कार्य में साक्षात्कार पद्धति, मनोवैज्ञानिक परीक्षण पद्धति तथा अवलोकन विधि, का प्रयोग कर आंकड़ों को जुटाने का प्रयास किया गया है।

संक्षेप

शिक्षा, अध्ययन अध्यापन की क्रिया के रूप में विद्यालय प्रक्रिया है विद्यालयी में कक्षा कार्य के लिए पुस्तकीय ज्ञान के विकास की आवश्यकता है। शिक्षा के क्षेत्र में नित नये आविष्कारों को शोध एवं अनुसंधान के रूप में देखा जा रहा है एवं विषय–वस्तु की आवश्यकता के अनुरूप उसे बदला जा रहा है। देश को इक्कीसवीं शताब्दी की ओर ले जानें के लिए शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व सर्वविदित है।

भारतीय शिक्षा में निहित कुछ प्रमुख समस्याओं के वर्णन एवं विश्लेशण तथा स्पष्टीकरण को प्रस्तुत करते हुए लधु शोध किया गया है। इत्यादि से सामग्री का समय का इस लधु शोध में समायोजित किया गया है। अतः प्रस्तुत शोध की अनुसंधान अध्ययन विधि अवलोकन साक्षात्कार तथा मनोवैज्ञानिक परीक्षण से संबंधित है।

पहली योजना में उच्च शिक्षा को शिक्षा क्षेत्र का कुल 9 प्रतिशत बजट उपलब्ध रहा जो 1970 दशक में बढ़ते–बढ़ते 25 प्रतिशत तक पहूँच गया है। विश्व विद्यालय अनुदान आयोग ने 9वीं पंचवर्षीय योजना में उच्च शिक्षा के लिये 829 करोड़ रूपये की माँग की थी और केवल 351 करोड़ रूपये ही आबंटित किया गया। उच्च शिक्षा के लिये आबंटित राशि में सरकार द्वारा निरन्तर की जा रही कटौती के दूरगामी दूषित परिणाम भी स्पष्ट दिखायी दे रहे हैं फिर भी सरकारइस कटौती को जायज ही मान रही है। शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है जो बिना किसी खूनी क्रान्ति के बडे पैमाने पर सामाजिक परिवर्तन अथवा सामाजिक चेतना ला सकती है। शिक्षा के निजीकरण से प्राइमरी से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षा प्राप्त करना टेढ़ी खीर हो गया है। इन निजी स्कूलों तथा शिक्षण

संस्थानों का शिक्षण शुल्क बहंत अधिक है। सभी वर्ग के लोगों को शिक्षा के निजीकरण से उत्पन्न होने वाली समस्याओं के प्रति गम्भीर रूप से संवेदनशील होना पड़ेगा अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब इस देश की निम्न तथा मध्यम वर्ग की लगभग 85 प्रतिशत जनता अपनी अगली पीढ़ियों को सुशिक्षित नहीं कर पायेगी। केवल उच्च घरानों के 10–15 प्रतिशत सम्पन्न लोग ही इसके लिए समर्थ होंगे।
सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित, अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।
सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस समस्या क्षेत्र में अनुसंधान की स्थिति क्या है ? क्या, कब, कहाँ, किसने और कैसे अनुसन्धानकार्य किया है ? इसके ज्ञज्ञन के द्वारा अध्ययन की योना बनाना सुविधाजनक हो जाता है।

शिक्षा में परिवर्तन हेतु सुझाव

शिक्षा में सुधार हेतु जब हम विचार करते है तो मुख्यताः तीन बिन्दुओं पर विचार आवश्यक है

1. शिक्षा का उद्देश्य

- शिक्षा का उद्देश्य जीवन जीने का लक्ष्य एवं जीवन जीने हेतु व्यवस्था।
- जीवन जीने के लिये चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास की आवश्यकता।

2. शैक्षिक वातावरण का सृजन

- संस्थाओं में शैक्षिक वातावरण के उन्नयन के लिये आधारभूत ढ़ांचे की उपलब्धता, विद्यार्थियों के लिये आवश्यक मूल सुविधाएँ तथा समर्पित, प्रतिबंद्ध अध्यापकों का चयन/निर्माण आवश्यक।

3. विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समग्र विकास

- शिक्षा का विस्तार एवं विकास
  उपरोक्त बातों की पूर्ति हेतु दो प्रकार से योजना आवश्यक है
  1. तात्कालिक सुधार हेतु योजनाएँ
  2. लम्बे समय की योजना

सुधार हेतु विभिन्न सुझाव

- विद्यालयीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण हेतु पाठ्यपुस्तक मंडल बनाया जाए।
- सरकारी विद्यालयों के स्तर के सुधार हेतु निश्चित योजना।
- समाजिक संस्थाओं को विद्यालय गोद देना।
- जिस विस्तार में विद्यालय है वहॉ प्रतिष्ठित नागरिकों एक समिति गठित करके उनका सहयोग लिया जाए।
- विद्यालयों में आवश्यक सुवाधाएँ उपलब्ध कराना।
  1. पीने का स्वच्छ पानी
  2. स्वच्छता गृह
  3. खेल का मैदान एवं साधन
  4. पुस्तकालय इत्यादि

पाठ्यक्रम में सुधार हेतु सुझाव

- सभी पाठ्यपुस्तकों में मूल्य का समावेश हो।
- गणित के अन्तर्गत वैदिक गणित का समावेश हो।
- योग को अनिवार्य विषय बनाया जाए।
- संगीत एवं कला को भी एक विषय के रूप में जोड़ा जाय।
- राष्ट्रगौरव भी एक विषय के रूप में हो।

भारत के स्वतन्त्र होने के बाद हमारे तथाकथित राष्ट्रनिर्माताओं ने मैकॉले की उसी शिक्षा प्रणाली को न केवल अपनाया बल्कि उसमें ऐसे परिवर्तन भी कर दिए कि भारत की जनता उन तथाकथित राष्ट्रनिर्माताओं को ओर भी महान समझने लगे, उनके द्वारा किए गए देशवासियों के शोषण को जरा भी न समझ पाए, भ्रष्टाचार के द्वारा उनकी कमाई अनदेखी करती रहे। सौ बात की एक बात कि वे अनन्तकाल तक अपने पदों पर विराजामन होकर जनता के द्वारा पूजे जाते रहे।

ऐसा हो अनुशासन

विद्यालय विद्यार्थियों का भी उतना ही होता है जितना कि शिक्षकों, प्रधानाध्यापों का, और यह सरकारी स्कूलों के लिए विशेष रूप से सही है। शिक्षकों और विद्यार्थियों में परस्पर निर्भरता होती है। खासकर आज के दौर में जब सीखने का काम सूचना की उपलब्धि पर निर्भर करता है औ ज्ञान का सृजन उन संसाधनों की नींव पर आधारित जिनके केन्द्र में शिक्षक होता है। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों ही एक दूसरे के बिना कार्य नहीं कर सकते। शिक्षा के संपादन को शिक्षक और विद्यार्थी वाली समझ से आगे बढ़कर प्रेरक व सगम बना कर विद्यार्थी की तरफ आना होगा, जिसमें सभी के पास यह सुनिश्चित करने का अधिकार और जिम्मेदारी कि शैक्षिम काम हो।
शिक्षक और संसाधन के प्रमुख अगर सत्ता की जगह अधिकार का इस्तेमाल करें तो ज्यादा उचित होगा। औचित्यहीनता और मनमानापन शक्ति के लक्षण होते हैं, उनसे डर पैदा होता है, आदर नहीं। स्कूल के सहभागी प्रबंधन में ऐसी व्यवस्था को विकसित करने की जरूरत है जिसमें बच्चों, शिक्षकों और प्रबन्धकों की सार्थक भूमिका हो। इस बात की भी आवश्यकता है कि बच्चों को अपनी परिषद हेतु प्रतिनिधि चुनने के लिए प्रोत्साहित किया जाए और इसी तरह शिक्षकों, प्रशासकों और अध्यापकों को भी अपने आप को संगठित करना चाहिए।

शोध निष्कर्ष

प्रायः ऐसा देखा गया है कि अध्यापक परिपक्व स्थिति में होते है और छात्र अपरिपक्व स्थिति में। यही कारण है कि मनोवैज्ञानिकों ने कहा है कि शिक्षण को छात्र–मनोविज्ञान का पूर्ण ज्ञान होना चाहिये। अतः–

1. शिक्षण के व्यक्तित्व में शिक्षक के व्यक्तित्व को आदर्श रूप देने वाले कारकों का विशिष्ट स्थान होता है।
2. छात्राों में इन विशिष्ट कारकों के विकास के लिये अध्यापक को अधिक से अधिक योगदान देना होता है।
3. अध्यापक को संयमी एवं संवगे से परिपक्व होना नितान्त आवश्यक है।
4. छात्रहित में कार्य करने, रूचिपूर्ण ढ़ंग से शिक्षा पर कार्य करने तथा समय–समय पर छात्रों को अभिप्रेरित करने से शिक्षण में कुशलता का विकास किया जा सकता है।
5. छात्रों में विविध वांछित कौशलों के विकास के लिये अध्यापक ही पूर्ण उत्तरदायी होता है।
6. शिक्षकों का छात्रों के प्रति नम्र व्यवहार, आपसी समन्वय होना चाहिए।
7. छात्रों और अध्यापकों के मध्य मधुर समबन्धों का स्थापित करना अति आवश्यक होता है। अतः आवश्यक है कि अध्यापक छात्रों से पुत्रवत् व्यवहार करे और छात्रों को चाहिए कि वे शिक्षक से पितातुल्य अर्थात गुरू रूप में ही व्यवहार करें।

उपरोक्त अध्ययन अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रभावी अध्ययन है इस अध्ययन में शिक्षकों के व्यक्तित्व को खोजकर उसे प्रभावशाली

बनाने के मार्ग दर्शाये गये है तथा छात्रों के व्यक्तिव्क को सत्त विकसित करने के लिये प्रेम, करूणा, एवं यथार्थ से सम्बन्धित सूत्र स्पष्ट किये गये है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(अ) हिन्दी माध्यम

1. अग्रवाल, एस0 के : ''शिक्षा के तात्विक सिद्धान्त'' राजेश पब्लिशिंग हाउस, मेरठ 1991–92
2. अवस्थी, कमला शंकर :''निराला पत्रिका'' त्रैमासिक पत्रिका, निराला प्रकाशन, उन्नाव, जनवरी–मार्च 2005, वर्ष 04, अंक–13
3. अस्थाना, बिपिनः''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, 1999
4. अस्थाना, बिपिन : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–7 (2008)
5. आनन्द, एस0 पी0 : ''शिक्षक शिक्षा'' टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज क्लाइमेट इन्वेन्टरी 1992
6. आनन्द, एस0 पी0 : ''इन द क्विस्ट ऑफ इफेक्टिवनेश ऑफ टीचर एजूकेशन इन्नोवेटिव एक्सपेरीमेन्ट्स एन्ड प्रेक्टिस इन एजूकेशन'' आर0सी0ई0 भुवनेश्वर, 1992
7. आनन्द, एस0 पी0 : ''ट्रेन्डस एन्ड थॉटस इन एजूकेशन'' एनालिसिस ऑफ आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट ऑफ टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, 1994
8. कपिल, एच0 के0 : ''अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में'' मॉडर्न प्रिन्टर्स, आगरा, 1998
9. कपिल, एच0 के0 : ''अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में'' अर्चना प्रिन्टर्स, आगरा, 1992–93
10. कपिल, एच0 के0 : ''सांख्यकी के मूल तत्व, सामाजिक विज्ञानों में'''' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2002
11. कुमार, के0 : ''सोशल क्लाईमेट इन स्कूल करेक्टरस्टिक्स ऑफ प्यूपिल्स'' बरोड़ा, 1972
12. मोहन, एल0 तथा मेनियन एल0 : ''रिचर्स मेथड इन एजूकेशन'' क्रम हेल्म, लन्दन, 1980
13. गुप्ता, एस0 पी0 गुप्ता, अलका : ''सांख्यिकीय विधियॉ'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद–2 (2009)
14. गुप्ता, एस0 पी0 : ''उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद–2004
15. गुप्ता, एस0 पी0 : ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2005
16. गुप्ता, रामबाबू : ''शैक्षिक प्रशासन'' आलोक प्रकाशन, लखनऊ, 1999
17. गैरिट, एच0 ई0 : ''सांख्यिकी के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, 1995
18. पाठक, पी0 डी0 : ''भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1974
19. पाठक, पी0 डी0 : ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1982
20. पाठक, त्यागी, पी0 डी0 : ''शिक्षा के सामान्य विद्धान्त'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1995